

53	स्युर्वनस्पतिकायस्य षडेते मूलत्रातयः ॥ १२०१ ॥	०७
54	नीलंगुः कृमिरत्तर्जः	१७
55	क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।	२७
56	पुलकास्तूभये ऽपि स्युः	३७
57	कीकसाः कृमयो ऽणवः ॥ १२०२ ॥	४७
58	काष्ठकीटो घृणो	५७
59	गण्डूपदः किंचुलकः कुसूः ।	६७
60	भूलता	७७
61	गण्डूपदी तु शि-	८७
62	ल्यस्रपा त्रलौकसः ॥ १२०३ ॥	९७
63	त्रलालोका त्रलूका च त्रलौका त्रलसर्पिणी ।	१०८
64	मुक्तास्फोटो ऽब्धिगण्डूकी शुक्तिः	११८
65	कम्बुस्तु वारितः ॥ १२०४ ॥	१२८
66	त्रिरेखः षोडशावर्तः शङ्खे	१३८
67	क्षुद्रकम्बवः ।	१४८
68	शङ्खनकाः दुष्टकाश्च	१५८
69	शम्बूकास्त्वम्बुमात्रजाः ॥ १२०५ ॥	१६८

53. Dies sind die sechs Hauptentstehungsarten der Pflanzenwelt. — 54. Innerlicher Wurm (2 W.). — 55. Kleiner, ausserhalb des Körpers lebender Wurm. — 56. Gemeinschaftlicher Name für beide. — 57. Kleine Würmer oder Insekten. — 58. Holzwurm. — 59. 60. Regenwurm (4 W.). — 61. Kleiner Regenwurm (2 W.). — 62. 63. Blutigel (6 W.). — 64. Perlmuschel (3 W.). — 65. 66. Muschel (5 W.). — 67. 68. Kleine Muscheln (3 W.). — 69. Zweischalige Muscheln, die bloss im Wasser leben.